✪ प्रश्न-7. ''मैं नर्क से बोल रहा हूँ'' कहानी के मूल प्रतिपाद्य को अपने शब्दों में लिखिए। [H.S. 2014]

✪ अथवा, 'मैं नर्क से बोल रहा हूँ' कहानी के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश दिया है ? स्पष्ट कीजिए। [H.S. 2016]

उत्तर – 'मैं नर्क से बोल रहा हूँ' हरिशंकर परसाई जी की एक व्यंग्यपरक कहानी है। कहानीकार ने अपने व्यंग्यात्मक कथनों से इंसानों को इंसानियत की राह बताने का प्रयास किया है। प्रस्तुत कहानी में कुत्ता कर्म, संघर्ष, निडरता का प्रतीक बनता है और यही प्रतीक लेखक का आदर्श है। यही मॉडल लेखक का काम्य है। जीवन में भाग्य, नियति, पाप, पुण्य के झमेले में पड़कर कर्महीन जीवन बिताने से अच्छा है अपनी बुद्धि, विवेक व शरीर का प्रयोग कर जीवन में संघर्ष कर कामयाबी हासिल करना न कि पड़े-पड़े मर जाना। इसीलिए लेखक लिखता है कि भगवान् ने निर्णय सुनाया –'मनुष्यों ने मुझे बहुत निराश किया, अब मैं कुत्ते-ही-कुत्ते निर्माण करने का विचार कर रहा हूँ।'

जीवन में मनुष्य को भी कुछ पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है तभी वह कुछ पा सकता है। चौरासी लाख योनियों में से एक मनुष्य योनि ही ऐसी है जिसे बुद्धि व विवेक का वरदान प्राप्त है। अतः इस बुद्धि व विवेक का प्रयोग करके उसे जीवन में संघर्ष करके अपने लिए सुख को हासिल करना चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो इसी तरह नरक को भोगता रहेगा। यही इस कहानी का संदेश है।

प्रश्न 8. कहानी में 'मैं' कौन है ? इसके चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : कहानी में मैं स्वयं लेखक है। संक्षेप में 'मैं' अर्थात् लेखक के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :-

1. गरीब व लाचार : मैं गरीब व लाचार है। उसकी एक ही लालसा है कि उसे भरपेट भोजन मिले। उसे अच्छे-अच्छे व्यंजनों और पकवानों की जरूरत नहीं। वह तो रूखी-सूखी खाकर ही अपना पेट भरना चाहता हैं किन्तु वह भी नसीब नहीं होता। वह स्वयं कहता है – ''जिन्दगी भर तिरस्कार का स्वाद लेते-लेते सहानुभूति मुझे उसी प्रकार अरुचिकर हो गई थी जिस प्रकार शहर के रहने वाले को देहात का शुद्ध घी।'' इस तरह वह गरीब और लाचार है। इसी गरीबी के कारण अन्न-अन्न की रट लगाते-लगाते उसकी मृत्यु हो जाती है।

2. परिस्थितियों से समझौता करना : वह गरीब और लाचार होने के साथ-साथ परिस्थितियों से समझौता करने वाला इन्सान है। व्यवस्था ऐसी खोखली हो गई है, अमीरी-गरीबी की दीवार इतनी मजबूत हो गई है कि परिस्थितियों से समझौता करने के अलावा उसके पास कोई रास्ता नहीं है। वह चाह कर भी विरोध नहीं कर सकता था।

3. कायर, भीरू एवं मूर्ख : 'मैं' अर्थात् लेखक कायर, भीरू एवं मूर्ख है। इन्हीं गुणों के कारण उसे अनाज से सस्ती मौत लगती है। तड़पते, बिलखते छटपटाते हुए वह दम तोड़ देता है किन्तु अपने हक को पाने के लिए प्रयास नहीं करता है। उसने प्रतिवाद करना सीखा ही नहीं था। मूर्खता के कारण ही वह पाप-पुण्य के झमेले में पड़कर मनुष्य के द्वारा बनाई गई दीवाल को तोड़ता नहीं है। वह स्वयं टूट जाता है। उसकी कायरता का पता निम्नलिखित पंक्तियों से चलता है। वह कहता है - ''अगर मैं मर न जाता तो गरीब आदमी की झोपड़ी पर अमीर के पाखाने की विजय भी इन आँखों से देखता।'' इस तरह वह कायर एवं मूर्ख है।

4. कुत्ते से प्रेम : उसे अपने कुत्ते से प्रेम है। कुत्ता भी उसे बहुत चाहता है' पत्नी उसका साथ छोड़ देती है किन्तु कुत्ता मरते दम तक उसका साथ निभाता है।

इस तरह 'मैं' यहाँ तमाम गरीबों, लाचारों एवं बेबसों का प्रतिनिधित्व कर रहा है। राजनीतिक व्यवस्था खोखली हो गई है। पूँजीवाद का बोलबाला है। ऐसी हालत में गरीब इन्सान भूखों मरने के सिवा और कर ही क्या सकता है।

प्रश्न 9. कुत्ता कौन है? उसके चरित्र की क्या विशेषता है?

उत्तर : कुत्ता एक स्वामीभक्त चौपाया जानवर है। वह जीवों में निकृष्ट माना जाता है किन्तु उसमें अनेक ऐसे गुण हैं जो मनुष्यों के लिए भी अनुकरणीय है। इस कहानी में कुत्ता एक ऐसे जीव का (व्यक्ति का) प्रतिनिधित्व कर रहा है जिनमें साहस है, हिम्मत है एवं विरोध की क्षमता है। कुत्ता जैसे निकृष्ट प्राणी में साहस दिखाकर लेखक उन तमाम मनुष्यों पर व्यंग्य कर रहा है जो व्यवस्था के गुलाम हो गए हैं। जिनकी शक्ति और क्षमता मर गई है। लेखक ने यह दर्शाया है कि कुत्ता डंडे से मार खाता है। मार खाकर मर जाता है किन्तु टूटता नहीं है। भूख और लाचारी से समझौता नहीं करता है। इसका यह अर्थ नहीं कि वह उद्दण्ड हो गया है। वह अपने गुणों को भूल गया है। वह स्वामिभक्त भी है। लेखक की पत्नी जो अर्द्धांगिनी होती है जीवन भर साथ निभाने की कसमें खाती है। वह भी साथ छोड़ जाती है। कुत्तों को सेठानी प्यार करती थी। उसे पालना चाहती थी। वहाँ जाने पर उसे तमाम सुख मिलता किन्तु वह नहीं जाता है। दुर्दिन में मालिक का साथ नहीं छोड़ता है वह लेखक का मरते दम तक साथ निभाता है। इस तरह उसमें स्वामिभक्त के भाव कूट-कूट कर भरे हैं। बावजूद इसके वह हिम्मती और साहसी है। उसमें प्रतिरोध की क्षमता है। वह डंडा खाकर मरना पसन्त करता है किन्तु परिस्थितियों से समझौता करना उसे पसन्द नहीं है। वह कई बार भगवान का भोग खाते हुए पिटता है। वह बरबस प्रयास करके दीवाल लाँघकर अमीर के घर में घुसकर पकवान खा लेता है। इस प्रयास में उसे डण्डे से मार पड़ती है। इसी मार के कारण वह मर जाता है किन्तु भूख से समझौता नहीं करता है। वह अपने हक को पाने के लिए प्राण दे देता है। इसीलिए भगवान लेखक से कहते हैं :-

मूर्ख तेरा कुत्ता तुझसे ज्यादा समझदार है। वह घुस गया, खाया और डण्डे की मार से मरकर यहाँ आ गया। उसमें मनुष्यत्व है, तुझमें पशुत्व भी नहीं। मैंने तुम्हें बुद्धि दी है, हाथ पैर दिए हैं, कार्यशक्ति दी है और तू अकर्मण्य-बुजदिल कीड़े सा मर गया।

इस तरह कुत्ता साहसी है। स्वामिभक्त है। उसमें कर्मठता एवं कष्ट सहिष्णुता है। वह अधिकार पाने के लिए अपना प्राण देता है। इसीलिए उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। लेखक ने कुत्ते के चरित्र के माध्यम से संदेश दिया है कि हमें निरन्तर अपने अधिकारों को पाने के लिए सजग रहना चाहिए। जरूरत पड़े तो प्राण भी दे दें किन्तु अकर्मण्य, बुजदिल कीड़े सा बिलबिलाते हुए न मरें। मरना ही पड़े तो कुत्ते सा हक के लिए लड़ते हुए मरें।

(ख) लघुत्तरीय प्रश्न

नोट :- इस प्रकरण के अन्तर्गत दो अंकों के छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों का उत्तर देना है और जो उच्च माध्यमिक (XI) के वार्षिक परीक्षा के प्रश्न पत्र में प्रश्न नं. दो में आयेगा। उत्तर अधिकतम 30 शब्दों में लिखिए। 2×3=6

✪ 1. तुम जीवन का तिरस्कार और मरण का सत्कार करते हो? [H.S. 2015]

प्रश्न – (i) प्रस्तुत अंश के लेखक कौन हैं?

उत्तर – प्रस्तुत अंश के लेखक **'हरिशंकर परसाई'** जी हैं।

(ii) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश **'मैं नर्क से बोल रहा हूँ'** नामक पाठ से लिया गया है।

(iii) 'तुम' से संकेतित पात्र कौन है?

उत्तर – 'तुम' से संकेतित पात्र पत्थर की पूजा करने वाले **पाखण्डी मनुष्यों** है।

(iv) जीवन के तिरस्कार का क्या अर्थ है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – 'जीवन के तिरस्कार' का अर्थ है – जब तक मनुष्य जीवित रहता है तब तक कोई उसकी कद्र नहीं करता। चाहे वह भूख से मरे या रोग से। यदि जीवित रहते व्यक्ति को कुछ सुविधाएँ मुहैया हो जाएँ तो उनका जीवन सुरक्षित रह सकता है, किन्तु समाज के ठेकेदार धनिक वर्ग या शासन व्यवस्था ऐसा नहीं करती। इसीलिए लेखक ने 'जीवन का तिरस्कार' कहा है।

(v) 'मरण के सत्कार' का क्या अर्थ है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – 'मरण के सत्कार' का अर्थ यह है कि जिस व्यक्ति को कोई जीते जी **अन्न, जल व रोशनी** आदि सुविधाएँ नहीं देता, उसी व्यक्ति के मर जाने पर उसके मृतक शरीर को लोग कंधा देते हैं, अग्नि देते हैं, गंगाजल में हड्डियाँ प्रवाहित करते हैं या कब्र में स्थान देकर कब्र पर दीपक जलाते हैं। इसलिए लेखक ने 'मरण का सत्कार' कहा है।

(vi) प्रस्तुत पंक्ति की प्रसंग सहित अर्थ स्पष्ट करें।

उत्तर – प्रस्तुत पंक्ति कहानी के आरम्भिक अनुच्छेद से उद्धृत है। जिसमें लेखक ने समाज के ठेकेदारों को सम्बोधित करते हुए अपनी पीड़ा का बयान किया है। समाज का उच्च वर्ग जो पूजा-पाठ आदि धार्मिक कार्य तो करता है, पत्थर की मूर्ति की पूजा करता है, जो निर्जीव है – लेकिन जीवित मनुष्य की उपेक्षा करता है। आम जनता की पुकार शासन व समाज के उच्च लोगों तक नहीं पहुँच पाती। इसीलिए परसाई कहते हैं कि तुम्हें जीवित व्यक्ति की बात सुनने का अभ्यास नहीं है, इसलिए मैं मरकर बोल रहा हूँ। जीवित अवस्था में जिसे उपेक्षा मिलती है, उसके मरने पर लोग उसकी शवयात्रा में शामिल होते हैं। जिसे जीवन भर दो गज़ जमीन नहीं मिल पाती उसे मरने पर जमीन में दफनाते ही नहीं हैं, बल्कि उसकी कब्र पर चिराग भी जलाते हैं। भूख-प्यास से इंसान दम तोड़ देता है, क्रूर मनुष्य उसे पानी तक नहीं पूछता, किन्तु वही मनुष्य उसके मर जाने पर उसकी हड्डियों को गंगाजल में प्रवाहित करता है। इसीलिए लेखक कहता है कि इस सामाजिक-व्यवस्था में जीवन की अपेक्षा मृत्यु के बाद इंसान को अच्छी सुविधाएँ मिल जाती हैं। अतः लगता है कि आम अवधारणा के मुताबिक जीवन उपेक्षित है और मृत्यु का स्वागत होता है।

2. अन्न-अन्न की पुकार करता मर जाऊँ और मेरे मरने के कारण में भी अन्न का नाम न आवे।

प्रश्न – (i) प्रस्तुत अंश के लेखक कौन हैं?

उत्तर – प्रस्तुत अंश के लेखक **'हरिशंकर परसाई'** जी हैं।

(ii) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश **'मैं नर्क से बोल रहा हूँ'** नामक पाठ से लिया गया है।

(iii) 'तुम' से संकेतित पात्र कौन है?

उत्तर – 'तुम' से संकेतित पात्र पत्थर की पूजा करने वाले पाखण्डी मनुष्य है।

(iv) 'अन्न की पुकार' का क्या भाव है?

उत्तर – 'अन्न की पुकार' का अर्थ है गरीबी और भुखमरी। आजादी के बाद भी हमारे देश में गरीबी और भुखमरी की समस्या से निजात नहीं मिली। बल्कि कुछ ऐसा तंत्र बना कि कुछ मुट्ठी भर लोगों के हाथ में सुख-समृद्धि सिमट कर रह गई। आम जनता का वही हाल रहा। वह रोटी-कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं से भी वंचित रही। किन्तु शासन-व्यवस्था पर इस भुखमरी और कंगाली का कोई असर नहीं होता।

(v) 'मरने के कारण में अन्न का नाम न आवे' का क्या भाव है?

उत्तर – देश की राजनीतिक दाँव-पेंच की हालत यह है कि हर चीज की व्याख्या वह अपने हिसाब से करती है। भूख से यदि इंसान की मृत्यु साबित होती है तो यह शासन व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न लगाती है। इसलिए तथ्य को घुमाकर उसे आत्महत्या का रूप दे दिया जाता है, ताकि शासन-व्यवस्था कलंकित न होने पाए। लेखक का कहना है कि जिस अन्न के अभाव के कारण गरीब की मृत्यु होती है उसी को उसकी मृत्यु का कारण मानना चाहिए। तथ्य को तोड़ना मरोड़ना नहीं चाहिए।

(vi) प्रस्तुत पंक्ति का प्रसंग स्पष्ट करें।

उत्तर – प्रसंग : लेखक ने सामाजिक विषमताओं का आईना प्रस्तुत करने के लिए स्वर्ग-नरक की फैंटेसी का प्रयोग किया है।

(vii) प्रस्तुत पंक्ति की व्याख्या करें।

अर्थ : मृत्यु के बाद नर्कवासी बने लेखक को जब इस बात का पता चलता है कि उसकी मृत्यु के बाद बड़े-बड़े लोगों में बहस हुई। यहाँ तक कि मंत्री ने संसद में कहा कि मौत भूख से नहीं हुई है बल्कि आत्महत्या की गई है। इस बात को सुनने के बाद लेखक को इस बात का कष्ट होता है कि मेरी मृत्यु व्यवस्था की देन है अर्थात् वर्तमान शासन-व्यवस्था गरीब की मृत्यु की जिम्मेदार है। वह उस व्यवस्था के तहत मरता है जिसमें सुविधाओं का असमान वितरण है। किन्तु इस तथ्य को नकारकर इसे आत्महत्या का रूप दिया जाता है। मृत्यु का सही कारण भूख है, लेकिन इस तथ्य को छिपाकर उसे आत्महत्या का रूप देना गलत है। यदि सही कारण सामने आएगा तभी उसका समाधान संभव है। लेकिन राजनीति सही कारण को सामने आने नहीं देती। वस्तुतः अन्न के अभाव के कारण जिसकी मृत्यु हुई है उसका कारण अन्न को ही बताना चाहिए।

3. जहाँ लालफीते के कारण आग लगने के साल भर बाद बुझाने का आर्डर आता है।

प्रश्न – (i) प्रस्तुत अंश के लेखक कौन हैं?

उत्तर – प्रस्तुत अंश के लेखक **'हरिशंकर परसाई'** जी हैं।

(ii) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश **'मैं नर्क से बोल रहा हूँ'** नामक पाठ से लिया गया है।

(iii) प्रस्तुत बात किसने, किससे कहा है?

उत्तर – प्रस्तुत वाक्य कहानी का नायक **'मैं'** पत्थर की पूजा करने वाले पाखण्डी मनुष्यों से कह रहा है।

(iv) 'लाल फीते' का क्या अर्थ है? स्पष्ट करें।

उत्तर – 'लाल फीते' का अर्थ है – **शासन व्यवस्था**। लालफीता शब्द लालफीता शाही के लिए आया है, जिसका अर्थ है अफसरशाही। हमारे संवैधानिक ढाँचे में कार्यपालिका व न्यायपालिका के क्रियाकलाप लालफीताशाही के अन्तर्गत आते हैं। सरकारी कार्यों के संपादन, निर्णय आदि में लगने वाली वह देर लाल फीताशाही कहलाती है जो तरह-तरह की पेचिदी और प्रायः निरर्थक प्रक्रियाओं के कारण होती है अर्थात् दीर्घ सूत्रता। अंग्रेजी का रेड टेप ही हिन्दी में लालफीता है।

(v) प्रस्तुत पंक्ति का प्रसंग स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – प्रसंग : भूख से मरने के बाद लेखक नर्क का वासी बनता है और उसी दिन मरा उसका कुत्ता स्वर्ग का वासी बनता है। इस पर लेखक को आश्चर्य होता है कि मृत्यु लोक में तो अन्याय है

ही, क्या भगवान् के लोक में भी अन्याय है जो कुत्ते को स्वर्ग मिला और स्वयं उसे नर्क। हालांकि उसे अपने प्रिय कुत्ते के स्वर्ग में जाने से कोई दुःख नहीं है फिर भी वह स्वयं नर्क में पहुँचने का कारण जानना चाहता है। अतः वह अपनी फरियाद लेकर भगवान के पास जाना चाहता है।

(vi) प्रस्तुत पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

अर्थ : यहाँ पर लेखक पुनः शासन-व्यवस्था के ढीले रवैये पर व्यंग्य करता है कि यह मृत्युलोक तो है नहीं, जहाँ फरियाद नहीं सुनी जाती और न्याय-व्यवस्था ऐसी है कि जो फरियादी होता है उसे ही अपराधी ठहरा दिया जाता है। हमारी शासन-व्यवस्था में जो संवैधानिक व्यवस्था है उसमें विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका की कार्यप्रणाली ऐसी है जिसमें फरियादी की फरियाद का पहले आवेदन होता है, फिर जाँच का आदेश बनता है। इसके बाद जाँच की लम्बी प्रक्रिया चलती है। यह सारी प्रक्रिया इतना अधिक समय लेती है कि तब तक फरियादी के हौसले ही टूट चुके होते हैं या फरियाद का कोई मतलब नहीं रह जाता। इसी तथ्य के दृष्टान्त के रूप में लेखक ने यहाँ उदाहरण स्वरूप कहा है कि इस लाल फीताशाही या अफसरशाही में आग लगने के साल भर बाद बुझाने का आर्डर आता है। **'का बरसा जब कृषी सुखाने'** की अवधारणा इस अफसरशाही में पूर्णतया चरितार्थ होती है।

✪ 4. "नहीं, तुम झूठ बोलते हो। तुम्हारे देश के अन्न मंत्री ने लिखा है कि - 'तुमने आत्महत्या की।'

[मॉडल प्रन पत्र – 2014]

प्रश्न – (i) प्रस्तुत अंश के लेखक कौन हैं?

उत्तर – प्रस्तुत अंश के लेखक **'हरिशंकर परसाई'** जी हैं।

(ii) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश **'मैं नर्क से बोल रहा हूँ'** नामक पाठ से लिया गया है।

(iii) प्रस्तुत बात किसने, किससे कहा है?

उत्तर – प्रस्तुत वाक्य **भगवान** ने **नरकगामी लेखक** से कहा है।

(iv) 'तुम्हारे देश' का क्या अर्थ है?

उत्तर – तुम्हारे देश का अर्थ है – मृत्युलोक।

(v) 'अन्न मंत्री' के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर – 'अन्न मंत्री' के माध्यम से लेखक **शासन-व्यवस्था पर प्रहार करना** चाहता है जहाँ अंधेर ही अंधेर है।

(vi) इस पंक्ति के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर – इस पंक्ति के माध्यम से लेखक शासन-व्यवस्था में व्याप्त **भ्रष्टाचार, अन्याय** और **अंध-न्याय** की बात कहना चाह रहा है।

(vii) प्रस्तुत पंक्ति का प्रसंग स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति में शासन-व्यवस्था पर व्यंग्य की गयी है। इस शासन-व्यवस्था में कमजोर की गुहार को कोई सुननेवाला नहीं है और व्यवस्था के तहत यदि वह फरियाद करे तो हमारी अफसरशाही का रवैया ऐसा है कि फरियादी को ही दण्ड दिया जाता है।

(viii) प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

अर्थ : शासन व्यवस्था की मार झेलता हुआ लेखक यमलोक में भगवान से इस उम्मीद से फरियाद करता है कि कम से कम यहाँ उसे न्याय मिलेगा, उसके कुत्ते को स्वर्ग और स्वयं उसे नर्क क्यों मिला? जबकि कुत्ते ने कभी-कभी भगवान् के भोग को जूठा करने का पाप भी किया, किन्तु लेखक ने तो कोई पाप नहीं किया। इस पर भगवान ने बही-खाता निकालकर देखा और बताया कि उसने आत्महत्या की थी और चूँकि आत्महत्या एक पाप है इसलिए इस पाप का दण्ड भोगने के लिए उसे नर्क भेजा गया है। इस तथ्य से लेखक स्तब्ध होकर कहता है कि मैंने आत्महत्या नहीं की।

लेखक के इस इनकार पर भगवान् साक्ष्य देते हैं कि तुम्हारे यहाँ के अन्न मंत्री ने लिखा है कि तुमने आत्महत्या की है। तुम्हारे शरीर के पोस्ट मार्टम के आधार पर ऐसा निर्णय हुआ है।

5. मेरा पोस्टमार्टम हुआ ही नहीं। अरे मैं तो जला दिया गया था। इसके दस दिन बाद संसद में प्रश्नोत्तर हुए। तो क्या मेरी राख का पोस्टमार्टम हुआ?

प्रश्न – (i) प्रस्तुत अंश के लेखक कौन हैं?

उत्तर – प्रस्तुत अंश के लेखक 'हरिशंकर परसाई' जी हैं।

(ii) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश 'मैं नर्क से बोल रहा हूँ' नामक पाठ से लिया गया है।

(iii) प्रस्तुत बात किसने, किससे कहा है?

उत्तर – प्रस्तुत कथन लेखक ने भगवान से कहा है।

(iii) 'संसद में प्रश्नोत्तर' का क्या आशय है?

उत्तर – 'संसद में प्रश्नोत्तर' का आशय है - **कार्यपालिका की कार्य प्रणाली**। जहाँ शासन सत्ता के अनुकूल ही तथ्यों का प्रस्तुतीकरण होता है।

(iv) प्रस्तुत पंक्ति का प्रसंग स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति में झूठ व फरेब पर आधारित शासन-व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगाया जाता है।

(v) प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

अर्थ : यमलोक में स्वर्ग और नर्क के सम्बन्ध में भगवान् और लेखक के बीच संवाद से पता चलता है कि लेखक की मृत्यु भूख से नहीं हुई थी, बल्कि उसने आत्महत्या की थी और यह बात पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी सिद्ध करती है जिसे न्यायपालिका में पेश किया गया था और उसी गवाह के आधार पर आत्महत्या सम्बन्धी निर्णय सुनाया गया था। इस पर लेखक को आश्चर्य होता है क्योंकि पोस्टमार्टम तो मृतक शरीर का होता है और उसका मृतक शरीर तो उसके मरने के बाद सरकारी व्यवस्था से ही जला दिया गया था। जिस दिन उसका शव जलाया गया उसके दस दिन बाद संसद में इस बात पर बहस हुई कि मेरी मृत्यु का क्या कारण था। उस बहस के बाद मेरी मृत्यु के कारण को जानने का आदेश पारित हुआ होगा। इसके बाद एक लम्बी जाँच प्रक्रिया चली होगी। उसी जाँच-प्रक्रिया में मृतक का पोस्टमार्टम होता है जिसकी रिपोर्ट न्यायपालिका में पेश की जाती है। लेकिन जिस समय यह जाँच की प्रक्रिया चल रही होगी उस समय तक तो मेरा शरीर राख में बदल चुका था। फिर क्या मेरी राख का पोस्टमार्टम हुआ?

6. अगर मैं मर न जाता तो गरीब आदमी की झोपड़ी पर अमीर के पाखाने की विजय भी आँखों से देखता।

प्रश्न – (i) प्रस्तुत अंश के लेखक कौन हैं?

उत्तर – प्रस्तुत अंश के लेखक **'हरिशंकर परसाई'** जी हैं।

(ii) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश **'मैं नर्क से बोल रहा हूँ'** नामक पाठ से लिया गया है।

(iii) प्रस्तुत बात किसने, किससे कहा है?

उत्तर – प्रस्तुत वाक्य **नरकगामी लेखक** ने **भगवान** से कहा है।

(iv) प्रस्तुत पंक्ति की प्रसंग सहित अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – सप्रसंग अर्थ : भगवान से अपना जीवन-वृत्तान्त सुनाते हुए लेखक बताता है कि बाजार में बनी ऊँची अट्टालिका के पीछे एक ओर से पाखाना साफ करने का दरवाजा है और दूसरी ओर दीवार के सहारे लेखक की छपरी। अट्टालिका का मालिक लेखक की छपरी तोड़कर वहाँ भी अपना पाखाना बनाना चाहता था। इसी बीच भूख व अभाव से पीड़ित लेखक की मृत्यु हो गई। सरकारी व्यवस्था के तहत लेखक की लावारिस लाश का क्रिया-कर्म हुआ और उधर उसकी छपरी के स्थान

पर अट्टालिका के मालिक का पाखाना बन गया। यों तो लेखक ने अभाव का जीवन व्यतीत करते हुए अनेक प्रकार के अन्याय व शोषण को देखा था। अमीरों द्वारा गरीबों का दमन आम बात थी। इसीलिए लेखक कहता है कि यदि मेरी मृत्यु न हुई होती तो मैं इस घटना को भी देखता। एक गरीब आदमी को रहने खाने का ठिकाना नहीं और अमीर आदमी को पाखाने की संख्या व सुविधा बढ़ानी है। और अन्ततः गरीब की झोपड़ी और अमीर के पाखाने के संघर्ष में अमीर के पाखाने की विजय होती है यानि उस गरीब की झोपड़ी को तोड़कर अमीर का पाखाना बन गया। लेखक उसी की चर्चा यहाँ कर रहा है।

7. अट्टालिका के सहारे आदमी को जानना तो तुम्हें खूब आता है।

प्रश्न – (i) प्रस्तुत अंश के लेखक कौन हैं?

उत्तर – प्रस्तुत अंश के लेखक **'हरिशंकर परसाई'** जी हैं।

(ii) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश **'मैं नर्क से बोल रहा हूँ'** नामक पाठ से लिया गया है।

(iii) प्रस्तुत बात किसने, किससे कहा है?

उत्तर – प्रस्तुत वाक्य **नरकगामी लेखक ने भगवान** से कही है।

(iv) प्रस्तुत पंक्ति की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर – सप्रसंग अर्थ : भूख से मृत्यु हो जाने के उपरान्त नर्क में पहुँचे लेखक ने जब नर्क में भेजे जाने का कारण जानने के लिए भगवान से फरियाद की तो भगवान् के समक्ष उन्हें अपना जीवन वृत्तान्त भी सुनाना पड़ा। जीवन वृत्तान्त में उन्होंने अपनी छपरी और अमीर की अट्टालिका के बारे में भी बताया। जिनमें बीच में एक दीवाल की दूरी थी, किन्तु आर्थिक, सामाजिक स्थिति में उनमें जमीन-आसमान का अन्तर था। हमारे यहाँ की सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्था ही ऐसी है जिसमें असमानता, अन्याय, छद्म और पाखण्ड का बोलवाला है। अफसरशाही में अमीरों की सुनी जाती है। गरीबों की पुकार व फरियाद को कोई नहीं सुनता। लेखक को लगता है कि मनुष्य ही नहीं भगवान् भी सिर्फ अमीरों की ही सुनता है, उन्हें ही जानता समझता है, पहचानता है। इसी असमान स्थिति पर व्यंग्य करने के लिए लेखक ने भगवान से यह वाक्य कहा है।

8. मैंने प्रतिवाद करना सीखा नहीं था और यह स्थान भी उससे ज्यादा खराब नहीं था, जहाँ मैं जिन्दगी भर रह चुका था।

प्रश्न – (i) प्रस्तुत अंश के लेखक कौन हैं?

उत्तर – प्रस्तुत अंश के लेखक **'हरिशंकर परसाई'** जी हैं।

(ii) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश **'मैं नर्क से बोल रहा हूँ'** नामक पाठ से लिया गया है।

(iii) प्रस्तुत बात किसने, किससे कहा है?

उत्तर – प्रस्तुत वाक्य नरकगामी **लेखक ने भगवान** से कहा है।

(iv) प्रस्तुत पंक्ति की प्रसंग सहित अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – लेखक ने अपनी मृत्यु का वृत्तान्त भगवान् को सुनाने के उपरान्त कहा कि इस तरह से मेरी मृत्यु हुई और मैं मरकर नरक में आ गया। नरक में आने का मुझे कोई दुःख नहीं। मैं फरियाद करने भी नहीं आता क्योंकि जीवन भर अपनी परिस्थिति से समझौता करके रहने की आदत है मुझे। कभी भी जीवन से कोई सिकवा शिकायत नहीं की। संघर्ष भी नहीं किया यही कारण है कि नरक से भी बदतर स्थिति में ही जीवित अवस्था में मृत्यु लोक में रहा।

इस पंक्ति में अन्याय व शोषण, भुखमरी व गरीबी से न उबर पाने का कारण अन्तर्निहित है। और वह कारण है – प्रतिवाद न करना।

9. तू दीवाल न लाँघ सकता था? दीवाल तोड़ नहीं सकता था?

प्रश्न – (i) प्रस्तुत अंश के लेखक कौन हैं?

उत्तर – प्रस्तुत अंश के लेखक 'हरिशंकर परसाई' जी हैं।

(ii) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश **'मैं नर्क से बोल रहा हूँ'** नामक पाठ से लिया गया है।

(iii) प्रस्तुत बात किसने, किससे कहा है?

उत्तर – प्रस्तुत वाक्य भगवान ने नरकगामी लेखक से कहा है।

(iv) प्रस्तुत पंक्ति का प्रसंग स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – प्रसंग : कहानी में लेखक और कुत्ता एक ही दिन मरते हैं फिर भी लेखक को नर्क और कुत्ते को स्वर्ग मिलता है। लेखक भगवान् से इसका कारण पूछता है।

(v) प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – अर्थ : इसी संवाद में भगवान् लेखक से कहते हैं तुम भूख से मरे तो भी नर्क में रहोगे और कुत्ता स्वर्ग में रहेगा। क्योंकि कुत्ते ने भूख के खिलाफ संघर्ष किया और दीवाल को लाँघकर घुस गया और खाना खा आया और तू मनुष्य होते हुए भी हाय हाय करके मर गया। जबकि मनुष्य योनि का होने के नाते तुम्हें अपनी बुद्धि-विवेक का प्रयोग करना चाहिए था। अपनी परिस्थिति से संघर्ष करना चाहिए था तथा उससे उबरने का प्रयास करना चाहिए था। इसीलिए यह वाक्य कहा गया है कि तुझे भी दीवाल को पार करने का प्रयास करना चाहिए था या उस दीवाल को तोड़ देना चाहिए था। अर्थात् अपनी भूख से जूझने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए था। केवल हाथ पर हाथ रखकर बैठने से काम नहीं चलता।

(vi) पंक्ति में दीवाल से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – यहाँ **'दीवाल'** से तात्पर्य है – जाति-धर्म कानून एवं नीति की दीवाल या बँटवारा, समाज में व्याप्त दर्जे बन्दियाँ – जो कि हर प्रकार के फसाद की जड़ है। वह मनुष्य-मनुष्य में भेद करती है।

10. मेरे देशवासियो! मेरी जैसी मौत मत मरना। मेरे कुत्ते की तरह मरना।

प्रश्न – (i) प्रस्तुत अंश के लेखक कौन हैं?

उत्तर – प्रस्तुत अंश के लेखक **'हरिशंकर परसाई'** जी हैं।

(ii) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश **'मैं नर्क से बोल रहा हूँ'** नामक पाठ से लिया गया है।

(iii) प्रस्तुत बात किसने, किससे कहा है?

उत्तर – प्रस्तुत वाक्य लेखक ने देशवासियों से कहा है।

(iv) प्रस्तुत पंक्ति की प्रसंग सहित अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – सामान्य तौर पर प्रचलित कहावत के अनुसार **'कुत्ते की मौत मरना'** एक बुरी मौत के संदर्भ में जुड़ा है। किन्तु प्रस्तुत कहानी में यह मुहावरा प्रसंगवश नए सन्दर्भ में आया है। कुत्ता और लेखक दोनों एक ही दिन मरते हैं, किन्तु दोनों की मृत्यु में अन्तर है। कुत्ता भूख से परेशान होने पर उससे उबरने का प्रयास करता है और इसी प्रयास में वह धनी व्यक्ति की अट्टालिका में पक रहे पकवान को खाने के लिए अट्टालिका की दीवाल को फाँद जाता है और भरपेट खाना खाता है जबकि लेखक की भूख से अतड़ियाँ ऐंठ जाती हैं। भगवान् के न्याय के अनुसार लेखक की मौत **कायरता, अकर्मण्यता, भीरुता व मूर्खता** के कारण हुई जबकि कुत्ते की मौत **क्रांति, साहस और संघर्ष** के कारण हुई। कुत्ते ने मौत के खौफ को छोड़कर अपनी भूख मिटाने का प्रयास किया और इस प्रयास में वह सफल भी रहा। हालाँकि बाद में पिटाई के कारण उसकी मृत्यु हो गई। किन्तु लेखक के अनुसार कुत्ते की मौत अधिक बेहतर है, इसीलिए वह इस कहानी के माध्यम से देशवासियों को यह

सन्देश दे रहा है कि मेरी तरह कायर बनकर, हाथ पर हाथ धर कर बिना संघर्ष किये मरने से अच्छा है कुत्ते की तरह संघर्ष करते-करते मर जाना।

✪ 11. "दोनों मरे एक साथ मरे" – **[H.S. 2014]**

(i) किन दोनों के मरने की बात कही गई है?

उत्तर – यहाँ लेखक और कुत्ते दोनों के मरने की बात कही गई है।

(ii) इस कथन के प्रसंग का उल्लेख कीजिए। **1 + 1**

उत्तर – प्रस्तुत पंक्ति हरिशंकर परसाई रचित **"मैं नर्क से बोल रहा हूँ"** व्यंग्यात्मक कहानी से उद्धृत है। इस पंक्ति के द्वारा लेखक भगवान से अपने और कुत्ते की मौत का वृत्तान्त सुना रहा है। कुत्ते को स्वर्ग मिलता है और लेखक को नर्क इसी बात की शिकायत लेखक भगवान से करते हैं और कहते हैं कि वे भूख से मरे हैं। ईमानदारी का जीवन जिए हैं। कुत्ता चोरी करते मार खाकर मरा है फिर भी ऐसा अनर्थ क्यों?

✪ 12. "फिर भी तुम नर्क में रहोगे" – **[H.S. 2016]**

(क) 'तुम' से संकेतित पात्र कौन है?

उत्तर – 'तुम' से संकेतित पात्र स्वयं 'लेखक' है।

(ख) वक्ता ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर – प्रस्तुत अंश **मैं नर्क से बोल रहा हूँ** शीर्षक कहानी से उद्धृत है। यह कथन भगवान के द्वारा लेखक के प्रति कहा गया है। लेखक पर आरोप था कि उन्होंने अपने जीवन में कभी अन्याय का प्रतिकार नहीं किया था। भ्रष्ट नेता और लेखक दोनों को नर्क नसीब हुआ। दोनों को समान रूप से दोषी ठहराया गया। नेता ने दूसरों पर अत्याचार किया और लेखक ने उसे सहन किया। अत्याचार करनेवाला और उसे चुपचाप सहन करनेवाला समान रूप से पाप का भागीदार बनता है। 1+1

(ग) बहुविकल्पीय प्रश्न

1 अंक

नोट :– इस प्रकरण के अन्तर्गत एक अंको के नौ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से सभी प्रश्नों का उत्तर देना है और जो उच्च माध्यमिक (XI) के वार्षिक परीक्षा के प्रश्न पत्र में प्रश्न नं. एक में खण्ड-क में आयेगा। 1×9=9

1. हरिशंकर परसाई का जन्म हुआ था –

(क) 1824 ई० में [ ] (ख) 1624 ई० में [ ]

(ग) 1950 ई० में [ ] (घ) 1924 ई० में [ ]

उत्तर –(घ) 1924 ई० में

2. परसाई ने किस पत्रिका का प्रकाशन किया –

(क) वसुधा [ ] (ख) जनपक्ष [ ]

(ग) पक्षधर [ ] (घ) समयानन्तर [ ]

उत्तर –(क) वसुधा

3. परसाई का पूरा नाम क्या है?

(क) रमाशंकर [ ] (ख) देवीदत्त [ ]

(ग) हरिशंकर [ ] (घ) सीताराम [ ]

उत्तर –(ग) हरिशंकर

4. परसाई की कहानी किस भाव की है –

(क) तुलनात्मक [ ] (ख) व्यंग्यात्मक [ ]

(ग) जासूसी [ ] (घ) तिलस्मी [ ]

उत्तर –(ख) व्यंग्यात्मक

5. जबलपुर विश्वविद्यालय द्वारा परसाई को क्या उपाधि मिली –
(क) पी.एच.डी. [ ] (ख) डी-लिट् [ ]
(ग) वाचस्पति [ ] (घ) विद्यावारिधि [ ]
उत्तर –(ख) डी-लिट्

6. 'मैं नर्क से बोल रहा हूँ' कहानी परसाई रचनावली के किस भाग में संकलित है?
(क) एक [ ] (ख) दो [ ]
(ग) तीन [ ] (घ) चार [ ]
उत्तर –(ख) दो

7. परसाई द्वारा लिखित संस्मरण है –
(क) तिरछी रेखाएँ [ ] (ख) वैष्णव की फिसलन [ ]
(ग) हँसते हैं रोते हैं [ ] (घ) सुनो भाई साधो। [ ]
उत्तर –(क) तिरछी रेखाएँ

8. परसाई ने व्यंग्य क्यों लिखे –
(क) हँसने के लिए [ ] (ख) उपदेश के लिए [ ]
(ग) व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए [ ] (घ) लड़ने के लिए तैयार करने के लिए। [ ]
उत्तर –(घ) लड़ने के लिए तैयार करने के लिए।

9. कुत्ते ने दीवाल क्यों फाँदी ?
(क) काटने के लिए [ ] (ख) माँगने के लिए [ ]
(ग) खाने के लिए [ ] (घ) सोने के लिए । [ ]
उत्तर –(ग) खाने के लिए

10. लेखक नर्क से क्यों बोल रहा है?
(क) क्योंकि वह गूँगा है [ ] (ख) क्योंकि दुनिया बहरी है [ ]
(ग) क्योंकि लोग जीवित की बात नहीं सुनते। [ ] (घ) क्योंकि नर्क प्रभावशाली होता है। [ ]
उत्तर –(ग) क्योंकि लोग जीवित की बात नहीं सुनते।

11. लेखक को नर्क क्यों मिला?
(क) क्योंकि वह पापी था [ ] (ख) क्योंकि उसने आत्महत्या की [ ]
(ग) क्योंकि उसने हत्या की [ ] (घ) क्योंकि वह अकर्मण्य व कायर था। [ ]
उत्तर –(घ) क्योंकि वह अकर्मण्य व कायर था।

12. 'मैं नर्क से बोल रहा हूँ' कैसी रचना है?
(क) पद्यात्मक [ ] (ख) ऐतिहासिक [ ]
(ग) पौराणिक [ ] (घ) व्यंग्यात्मक। [ ]
उत्तर –(घ) व्यंग्यात्मक।

13. लेखक मरकर बोल रहा है क्योंकि ..... ?
(क) लोग जिन्दा आदमी की बात समझते हैं। [ ]
(ख) लोग मरे लोगों की भाषा समझते हैं। [ ]
(ग) लोगों को जिन्दा आदमी की बात सुनने का अभ्यास नहीं। [ ]
(घ) लोगों को जिन्दा आदमी की बात अच्छी नहीं लगती। [ ]
उत्तर –(ग) लोगों को जिन्दा आदमी की बात सुनने का अभ्यास नहीं।

14. लेखक की मौत कैसे होती है?
(क) आत्महत्या द्वारा [ ] (ख) छत से गिरकर [ ]

(ग) भूख से [ ] (घ) स्वाभाविक मौत [ ]

उत्तर –(ग) भूख से

15. स्वर्ग और नर्क की दीवार की सेंध से लेखक को किसने देखा?

(क) लेखक की पत्नी ने [ ] (ख) यमराज ने [ ]

(ग) एक मन्त्री ने [ ] (घ) लेखक के कुत्ते ने [ ]

उत्तर –(घ) लेखक के कुत्ते ने

16. लेखक की स्त्री किसके साथ भाग गई थी?

(क) एक मन्त्री के साथ [ ] (ख) अपने प्रेमी के साथ [ ]

(ग) एक धनी के साथ [ ] (घ) अपने पड़ोसी के साथ [ ]

उत्तर –(ग) एक धनी के साथ

17. लेखक के मरने के बाद उसके शव का क्या किया गया?

(क) उसका पोस्टमार्टम हुआ [ ] (ख) उसे जला दिया गया [ ]

(ग) उसे दफना दिया गया [ ] (घ) उसे गंगा में बहा दिया गया। [ ]

उत्तर –(ख) उसे जला दिया गया

✪ 18. लेखक के मृत शरीर को जलाने के कितने दिनों बाद संसद में प्रश्नोत्तर हुए?

[Model–2014, H.S. 2014]

(क) तीन दिनों बाद [ ] (ख) नौ दिनों बाद [ ]

(ग) बारह दिनों बाद [ ] (घ) दस दिनों बाद [ ]

उत्तर –(घ) दस दिनों बाद

19. मरते समय लेखक को किस बात का सन्तोष रहा?

(क) उसकी मौत पकवानों के बीच हुई [ ] (ख) उसकी मौत अन्न के अभाव में हुई। [ ]

(ग) उसकी मौत शहर में हुई [ ] (घ) उसकी मौत जनता के बीच हुई। [ ]

उत्तर –(क) उसकी मौत पकवानों के बीच हुई

20. बारात के पीछे मंगल गान हो रहा था जबकि लेखक की लाश के पीछे .....?

(क) जुलूस चल रही थी [ ] (ख) एक भी रोने वाला नहीं था [ ]

(ग) नेता चल रहे थे [ ] (घ) पुलिस थी। [ ]

उत्तर –(ख) एक भी रोने वाला नहीं था

21. नर्क में भेजने पर भी लेखक को दुःख क्यों नहीं हुआ?

(क) नर्क ही उनका घर था। [ ] (ख) उन्होंने बहुत पाप किए थे। [ ]

(ग) उन्होंने प्रतिवाद करना नहीं सीखा था। [ ] (घ) वे भूख से मरे थे। [ ]

उत्तर –(ग) उन्होंने प्रतिवाद करना नहीं सीखा था। [ ]

22. लेखक को मरने पर नर्क मिला और कुत्ते को स्वर्ग, क्यों?

(क) कुत्ते ने पाप किया था। [ ] (ख) कुत्ता जानवर है। [ ]

(ग) कुत्ते ने पुण्य किया था। [ ] (घ) कुत्ते ने अन्याय का विरोध किया था। [ ]

उत्तर –(घ) कुत्ते ने अन्याय का विरोध किया था।

✪ 23. 'मैं नर्क से बोल रहा हूँ' पाठ के लेखक कौन हैं? **[H.S. 2014]**

(क) प्रेमचंद [ ] (ख) भुवनेश्वर [ ]

(ग) हरिशंकर परसाई [ ] (घ) गुलाब राय। [ ]

उत्तर –(ग) हरिशंकर परसाई

✪ 24. 'मैं नर्क से बोल रहा हूँ' कहानी में लेखक क्या कहना चाहता है –[Model - 2014]

(क) आत्महत्या नहीं करनी चाहिए [ ] (ख) अन्याय का विरोध करना चाहिए [ ]

(ग) भूखे पेट नहीं सोना चाहिए [ ] (घ) लेखक बन जाना चाहिए [ ]

उत्तर –(ख) अन्याय का विरोध करना चाहिए

25. मृत लेखक की लाश को किस वाहन में ले जाया गया?

(क) ठेला से [ ] (ख) मोटर से [ ]

(ग) विमान से [ ] (घ) म्यूनिसिपालिटी की टीन की गाड़ी [ ]

उत्तर –(घ) म्यूनिसिपालिटी की टीन की गाड़ा

26. लेखक की मृत्यु के कारण का पर्दाफाश किसने किया?

(क) डॉक्टर ने [ ] (ख) शवयात्रा में भाग लेने वालों ने [ ]

(ग) मंत्री महोदय ने [ ] (घ) भगवान ने [ ]

उत्तर –(घ) भगवान ने

27. लेखक के मृत शरीर को–

(क) दफनाया गया [ ] (ख) जलाया गया [ ]

(ग) जल समाधि दी गई [ ] (घ) म्यूजियम में रख दिया गया [ ]

उत्तर –(ख) जलाया गया

28. तमाम दीवारें किसने खड़ी की हैं –

(क) भगवान ने [ ] (ख) राजमिस्त्रियों ने [ ]

(ग) सरकार ने [ ] (घ) आदमियों ने [ ]

उत्तर –(घ) आदमियों ने

29. भगवान ने व्यंग्यकार से कहा–

(क) तुम बड़े ईमानदार थे [ ] (ख) कायर थे [ ]

(ग) परिश्रमी थे [ ] (घ) परोपकारी थे [ ]

उत्तर –(ख) कायर थे

30. भगवान ने क्रोध से अन्त में कहा –

(क) तुम्हारी जैसी करनी थी, उसी का फल पाया [ ] (ख) तुम भोले भण्डारी थे [ ]

(ग) तुमने मुझे बहुत निराश किया [ ] (घ) तुम्हें स्वर्ग नहीं मिलेगा [ ]

उत्तर –(ग) तुमने मुझे बहुत निराश किया

31. क्रोधित होकर भगवान ने लेखक से कहा –

(क) अब मैं ईमानदार लोगों को नहीं बनाऊँगा [ ]

(ख) अब मैं चोर उचक्कों का निर्माण करूँगा [ ]

(ग) अब मैं कुत्तों का निर्माण करूँगा [ ]

(घ) अब मैं सिर्फ जानवरों का निर्माण करूँगा [ ]

उत्तर –(ग) अब मैं कुत्तों का निर्माण करूँगा

32. लेखक ने देशवासियों से कहा –

(क) तुम वीरों की मौत मरना [ ]

(ख) तुम अमीरों की तरह मरना [ ]

(ग) तुम मेरी तरह नहीं, मेरे कुत्ते की तरह मरना [ ]

(घ) तुम नेताओं की तरह मरना [ ]

उत्तर – (ग) तुम मेरी तरह नहीं, मेरे कुत्ते की तरह मरना

Q.33. मैं नर्क से बोल रहा हूँ – किस विधा में रचित है? [H.S. 2016]

(क) यात्रा वृत्तांत [ ] (ख) डायरी [ ]

(ग) कहानी [✓] (ख) निबंध। [ ]

अन्य लघुत्तरीय प्रश्न

1. कहानी क्या है?

उत्तर – कहानी हिन्दी गद्य की एक विधा है।

2. फैंटेसी क्या है?

उत्तर – फैंटेसी है मानव मन की गतियाँ जो स्वप्न के रूप में अतार्किक तथा अकल्पनीय रूप में प्रस्तुत होती है।

3. फैंटेसी का सम्बन्ध किससे है?

उत्तर – फैंटेसी का सम्बन्ध मनोविज्ञान से है।

4. लेखक ने पत्थर पूजनेवालो किसे कहा है?

उत्तर – लेखक ने अति धार्मिकता और भक्ति भावना में डूबे सगुण भक्तिधारा के मानने वालों को पत्थर पूजनेवाला कहा है।

5. लेखक कहाँ से बोल रहा है?

उत्तर – लेखक नर्क से बोल रहा है। वह मरणोपरान्त नर्क में पहुँच कर बोल रहा है।

6. लोग किसके मरण का उत्सव मना रहे हैं?

उत्तर – लोग अपने उन अजीज लोगों के मरण का उत्सव मना रहे हैं, जिसे जीवित रहने पर घोर उपेक्षा और तिरस्कृत किया है।

7. कहानी में मैं कौन है ? उसका मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर – कहानी में मैं स्वयं लेखक है। वह एक चेतन एवं संवेदनशील प्राणी है। वह समझौता परस्त है, कायरता, भीरुता उसके चरित्र की विशेषता है।

8. (लेखक की) मैं की मौत कैसे हुई थी?

उत्तर – मैं, (लेखक की) की मौत भूख से हुई थी।

9. किसने कहाँ कहा कि लेखक (मैं) की मौत भूख से नहीं हुई?

उत्तर – देश के किसी मंत्री ने संसद में कहा कि इस मौत का कारण भूख नहीं थी। मरने वाले ने आत्महत्या की।

10. लेखक के लिए सहानुभूति क्यों अरुचिकर हो गई थी?

उत्तर – जीवन भर अभाव, तिरस्कार और उपेक्षा का दंश सहते-सहते वह (लेखक) इतना टूट चुका था कि सहानुभूति के स्वर उसे अरुचिकर लगने लगे थे।

11. कुत्ते और लेखक का क्या सम्बन्ध था?

उत्तर – कुत्ता लेखक द्वारा पालित था। उन दोनों का सम्बन्ध स्वामी और भक्त का था। लेखक के मरने के साथ ही उसने भी मरण को वरण कर लिया था।

12. लेखक के साथ कुत्ता कब से था?

उत्तर – लेखक के साथ कुत्ता तब से था, जब से उसकी पत्नी एक धनवान के साथ पलायन कर गई थी।

13. लेखक और कुत्ते की मौत में क्या वैसम्य था?

उत्तर – लेखक की मृत्यु भूख से हुई थी जबकि कुत्ते की मौत भरपेट छक कर खाने से हुई थी। लेखक भीरु था और कुत्ता पराक्रमी।

14. यमलोक की किस व्यवस्था को देखकर लेखक दुःखी हुआ?

उत्तर – यमलोक की न्याय व्यवस्था को देखकर लेखक को बहुत दुःख हुआ। लेखक को पृथ्वी पर तो न्याय मिला ही नहीं यहाँ (यमलोक) भी उसे न्याय नहीं मिला। उसने कभी चोरी नहीं की किसी का जी नहीं दुखाया, तो उसे नर्क और जिसने चोरी की उसे स्वर्ग मिला।

15. लेखक की मौत आत्महत्या में कैसे बदल गई?

उत्तर – लेखक की भूख से हुई मौत को सरकार ने स्वीकार नहीं किया। मंत्री महोदय की रिपोर्टिंग जो यमलोक में गई थी, उसमें साफ लिखा था कि लेखक की मौत भूख से नहीं, आत्महत्या से हुई है।

16. लेखक की आत्महत्या की पुष्टि किससे हुई थी?

उत्तर – पोस्टमार्टम की रिपोर्ट से लेखक की आत्महत्या की पुष्टि हुई थी।

17. मृतक ने क्यों कहा कि उसके मृतक शरीर का पोस्टमार्टम हुआ ही नहीं?

उत्तर – मृतक ने ऐसा इसलिए कहा था क्योंकि उसके मृतक शरीर को तो जला दिया गया था फिर क्या राख का पोस्टमार्टम हुआ।

18. भगवान कब स्वर्ग से गिरते-गिरते बचे?

उत्तर – जब मृतक लेखक ने यह कहा कि उसका पोस्टमार्टम हुआ ही नहीं था। यह सुनकर भगवान स्वर्ग से गिरते-गिरते बचे थे।

19. लालफीताशाही क्या है?

उत्तर – सरकारी कार्य प्रणाली को लालफीताशाही कहा जाता है।

20. लेखक भगवान के पास क्यों गया था?

उत्तर – पृथ्वी पर अन्याय भोगने के बाद लेखक भगवान के पास इस आशा से गया था कि उसे यमलोक में न्याय मिलेगा। वह न्याय की गुहार करने भगवान के पास गया था।

21. लेखक ने जीवनभर क्या किया था?

उत्तर – लेखक ने जीवनभर **अन्याय सहा** था। जीवनभर कोई बुरा काम नहीं किया। भूखों मर गया पर कभी चोरी नहीं की थी।

22. भगवान ने क्या देखकर कहा था कि उसने आत्महत्या की है?

उत्तर – भगवान ने एक **बही** देखकर कहा था कि उसने आत्महत्या की है।

23. लेखक ने भगवान से क्या जानना चाहा था?

उत्तर – लेखक ने भगवान से यह जानना चाहा था कि वे नहीं जानते वह कहाँ जिया, कहाँ रहा और कैसे, कहाँ मरा।

24. अपने जीवन काल में लेखक कैसे जीवित था?

उत्तर – लेखक अपने जीवन काल में रोज मृत्यु को टालता जाता था, जीवन के लिए घोर संघर्ष करता था।

25. लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि जन्म के साथ ही मेरी मृत्यु शुरू हो गई थी?

उत्तर – जीवन-जीने का संघर्ष इतना जटिल था कि उसे जीने के लिए रोज-रोज मरना पड़ता था। घोर उपेक्षा एवं तिरस्कार सहनी पड़ती थी।

26. लेखक के अनुसार गरीबों के शोषण का क्या कारण है?

उत्तर – लेखक के अनुसार गरीबों के शोषण का मुख्य कारण **सरकारी उपेक्षा, लालफीताशाही अफसरशाही है।**

27. कुत्ते ने दीवार क्यों लाँघी?

उत्तर – सेठ के घर की ओर से सुगंधित पकवानों की सुगंध आ रही थी। कुत्ता बहुत भूखा था। भोजन प्राप्त करने के लिए कुत्ते ने दीवार लाँघी।

28. कुत्ते की मौत कैसे हुई?

उत्तर – सेठ के लट्ठ प्रहार से कुत्ते की मौत हुई थी।

29. कुत्ते की मौत और लेखक की मौत में क्या विरोधाभास थी?

उत्तर – कुत्ते की मौत भरपेट भोजन करने से एक वीर की तरह हुई, जबकि लेखक की मौत भूख से कायर की तरह हुई थी।

30. लेखक कहाँ रहता था?

उत्तर – लेखक एक धन्ना सेठ के पाखाने से सटी दीवार से छप्पर डालकर रहता था।

31. लेखक अगर जीवित रहता तो क्या देखता?

उत्तर – लेखक अगर जीवित रहता तो अपने छप्पर के स्थान पर उस अमीर के पैखाने का विस्तार अपनी ही आँखों से देखता।

32. आदमी से अधिक तुम उस अट्टालिकों को पहचानते हो लेखक के इस व्यंग को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – लेखक यह कहना चाहता है कि गरीबों की कहीं भी कोई पहचान नहीं है, यहाँ तक कि भगवान के दरबार में भी नहीं।

33. दीवार के पास से आने वाले चूहे दिन पर दिन मोटे क्यों होते जा रहे हैं?

उत्तर – दीवार के पास अट्टालिका के मालिक का घर था, जहाँ संपन्नता अपने चरम पर थी। वहाँ अन्न कोई पूछने वाला नहीं था। उसे खा-खा कर चूहे मोटे होते जाते थे।

34. अनाज से मौत सस्ती किस प्रकार थी?

उत्तर – लेखक के जीवित रहते अनाज 10 रु० किलो था जबकि मौत की कोई कीमत नहीं थी। अनाज के लिए खून-पसीना बहाना पड़ता, जबकि मौत फोकट में मिलती थी, इसलिए मौत सस्ती थी।

35. सारा गाँव किस बात को जानता था?

उत्तर – सारा गाँव इस बात को जानता था कि अट्टालिका के मालिक के गोदाम में हजारों बोरे अन्न का भंडार था। वहीं दूसरा आदमी अन्नाभाव में भरने को विवश था।

36. अवैध अन्न भण्डार की सुरक्षा कौन कर रहा था?

उत्तर – अवैध अन्न भण्डार की सुरक्षा सरकार का **पुलिस महकमा** कर रहा था।

37. लेखक को अपनी मौत पर संतुष्टि क्यों थी?

उत्तर – लेखक अपने मौत के दिन को अपने जीवन का गौरवशाली दिन मानता था क्योंकि उस दिन उसे संतुष्टि हो रही थी कि उसे मधुर पकवानों की खूब सुगंधि मिली थी। सुगन्ध को सरकार ने प्रतिबंधित नहीं किया था।

38. मौत के पहले लेखक के कुत्ते ने क्या किया था?

उत्तर – मौत के पहले कुत्ते ने बड़ा दुस्साहस किया था। उस दिन वह दीवार को लाँघ कर सुगन्धित पकवानों की ढेर के पास पहुँच गया था और पेट भर खाना खाया।

39. कुत्ते और लेखक की चीख में क्या अन्तर था?

उत्तर – लेखक की चीख भूख के ऐंठन की चीख थी और कुत्ते की चीख का कारण डण्डे की चोट थी। दोनों की मौत में अन्तर यही था कि एक **खाकर मरा** और दूसरा भूखा।

40. लेखक को मरणोपरान्त नर्क मिला और कुत्ते को स्वर्ग, क्यों?

उत्तर – लेखक ने जीवन भर अन्याय को सहन किया, कभी उसका विरोध नहीं किया था। कुत्ता अन्याय का विरोध करते हुए मरा था, इससे कुत्ते को स्वर्ग और लेखक को नर्क मिला।

41. अफसरशाही में किसकी बात सुनी जाती है?

उत्तर – अफसरशाही में अमीरों की बात सुनी जाती है।

42. लेखक ने स्वर्ग एवं नर्क की फैंटेसी को क्यों व्यक्त किया है?

उत्तर – लेखक ने सामाजिक वैषम्य को स्पष्ट करने के लिए फैंटेसी का सहारा लिया है और उसमें खूब सफल हुआ है।

43. लेखक की मौत किसकी देन थी?

उत्तर – लेखक की मौत सरकारी उपेक्षा और अव्यवस्था की देन थी।

44. लेखक की मौत का जश्न किसके द्वारा मनाया गया था?

उत्तर – लेखक की मौत का जश्न सरकार द्वारा मनाया गया था। उसकी अंतिम यात्रा में म्यूनिसिपेलिटी की गाड़ी का प्रयोग किया गया था। उसके मौत की चर्चा संसद व न्यायपालिका में हुई थी, यह कोई साधारण बात नहीं थी।

45. सरकार ने कहाँ उदारता दिखाई?

उत्तर – सरकार ने लावारिस के अंतिम संस्कार में बड़ी उदारता दिखाई। उसके शव के लिए गाड़ी एवं लकड़ी की व्यवस्था कर दी थी।

46. लेखक की मौत पर कौन उदास होता?

उत्तर – अगर कुत्ता जीवित रहता तो लेखक की मौत पर कम से कम वह उदास जरूर हुआ होता।

47. लेखक को नर्क की व्यवस्था से दुःख क्यों नहीं हुआ?

उत्तर – लेखक को नर्क की व्यवस्था से दुःख नहीं हुआ क्योंकि वह जीवित रहते हुए भी तो जिंदा नरक में रहता था।

48. भगवान ने लेखक को क्या आश्वासन दिया?

उत्तर – भगवान ने व्यंग्यकार को आश्वासन देते हुए कहा कि यह तुम्हारे बगलवाला कमरा मरणोपरांन्त उस झूठे और मक्कार मंत्री के लिए आरक्षित कर दिया गया है।

49. भगवान ने लेखक को क्यों फटकार लगाई?

उत्तर – भगवान ने लेखक की कायरता और उसकी नपुंसकता के कारण फटकार लगाई।

50. भगवान ने लेखक को कायर क्यों कहा?

उत्तर – भगवान ने मृत लेखक को कायर कहा क्योंकि लेखक उस दीवार को तोड़ नहीं सका जो उसके जीवन और मृत्यु की विभाजक बनी हुई थी।

51. भगवान ने लेखक से उसके कुत्ते को क्यों समझदार कहा?

उत्तर – भगवान ने लेखक से उसके कुत्ते को समझदार इसलिए कहा कि कुत्ते ने हार नहीं मानी वह भोजन के लिए लड़कर मरा। वह वीरों की मौत मरा।

52. भगवान ने अंत में निराश होकर लेखक से क्या कहा?

उत्तर – भगवान ने अंत में निराश होकर लेखक से कहा कि वे मनुष्य की ईमानदारी और उसकी कायरता से तंग आ चुके हैं इसलिए अब कुत्ते-ही कुत्ते का निर्माण करने की सोच रहे हैं।

53. इन्द्रासन किसको नहीं मिलता है?

उत्तर – इन्द्रासन अकर्मण्य, भीरू, कायर और मूर्ख को नहीं मिलता है।

54. लेखक देशवासियों से क्या कह रहा है?

उत्तर – लेखक देशवासियों से कह रहा है तुम मेरे जैसी मृत्यु नहीं मरना, मेरे कुत्ते की सी मौत मरना।

55. 'मै' नर्क से बोल रहा हूँ' कहानी का मुख्य संदेश क्या है?

उत्तर – आलोच्य कहानी का मुख्य संदेश है कि मनुष्य को साहस के साथ जाति, धर्म एवं गतानुगतिकता एवं धार्मिक संकीर्णता की दीवार को तोड़ देना चाहिए।

●●●